Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER-TET

Uttar Pradesh Basic Education Board

भाग – 1

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

SUPER – TET (2022)

CONTENTS

हिन्दी		
1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	4
3.	शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)	7
4.	हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण	10
5.	तत्सम – तद्भव	13
6.	देशज शब्द	15
7.	उपसर्ग	17
8.	प्रत्यय	20
9.	संधि	24
10.	समास	41
11.	संज्ञा	50
12.	सर्वनाम	55
13.	विशेषण	57
14.	क्रिया	58
15.	अव्यय/अविकारी शब्द	60
16.	पर्यायवाची	64
17.	विलोम शब्द	67
18.	वाक्य के लिए एक शब्द	75
19.	शब्द युग्म	81
20.	एकार्थी शब्द	92
21.	वर्तनी शुद्धि	99
22.	वाक्य भेद	103
23.	पद बंध	105
24.	पद परिचय	108

25.	वचन	111
26.	लिंग	114
27.	काल	119
28.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	122
29.	कारक एवं विभक्ति	126
30.	काव्य में भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, शिल्प सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	132
31.	मुहावरे	136
32.	लोकोक्ति	146
33.	अपठित पद्यांश	159
34.	अपठित गद्यांश	167

प्रत्यय

परिभाषा - वे शब्दांश जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण और क्रिया/धातु के बाद लगकर नये सार्थक शब्द की रचना कर देते है और अर्थ में परिवर्तन कर देते है उन्हे प्रत्यय कहते है ।

प्रत्यय के प्रकार -

1. कृदन्त प्रत्यय (धातु के बाद के प्रत्यय)
2. तद्धित प्रत्यय (शब्द के बाद के प्रत्यय)

- धातु के बाद में जो प्रत्यय लगता है उसे कृदन्त प्रत्यय कहते है ।
- शब्दो के बाद में जो प्रत्यय लगते है उन्हे तद्धित प्रत्यय कहते है ।

कृदन्त प्रत्यय के भेद -

1. कर्तृवाचक
2. कर्मवाचक
3. भाववाचक
4. क्रियावाचक
5. करण वाचक/साधनवाचक

तद्धित प्रत्यय के भेद -

1. कर्तृवाचक
2. भाव वाचक
3. सम्बन्ध वाचक
4. अपत्यवाचक / सन्तान वाचक
5. ऊनतावाचक / न्यूनतावाचक कर्म वाचक
6. स्त्रीवाचक

कृदन्त प्रत्यय

1. कर्तृवाचक

उदाहरण -

लेख + अक - लेखक
वाच + अक - वाचक
गै + अक - गायक
कृ + अक - कारक
चला + अक - चालक
भूल + अक्कड - भुलक्कड
घुम + अक्कड - घुमक्कड
पी + अक्कड - पियक्कड
लुट + एरा - लुटेरा

2. कर्मवाचक

उदाहरण -

खेला + आना - खिलौना
बिछ + आना - बिछौना
सुंघ + नी - सुंघनी

3. भाववाचक

उदाहरण -

बैठ + अक - बैठक
उठ + अक - ऊठक
दिखा + आऊ - दिखाऊ
टिक + आऊ - टिकाऊ
भिड + अन्त - भिडन्त
लड + आई - लडाई
घुम + आव - घुमाव
लिख + आवट - लिखावट
घबरा + आहट - घबराहट
बोल + ई - बोली
चुन + आती - चुनौती
बैठ + नी - बैठनी
ऊठक कट + आई - कटाई

4. क्रिया बोधक

उदाहरण -

चल + हुआ - चलता हुआ
सुन + हुआ - सुनता हुआ
पढ + हुआ - पढता हुआ

5. करणवाचक साधन

उदाहरण -

बेल + अन - बेलन
झाड + अन - झाडन
खुरच + अन - खुरचन
लेखन + नी - लेखनी
कतर + नी - कतरनी
छल + नी - छलनी

तद्धित प्रत्यय

1. कर्तृवाचक

लोहा + आर - लुहार
कहा + आर - कहार
गँवा + आर - गँवार
सोना + आर - सुनार
घास + आरा - घसियारा
लाख + एरा - लखेरा

2. भाववाचक

भला + आई - भलाई
बुरा + आई - बुराई
अच्छा + आई - अच्छाई
मोटा + आपा - मोटापा
बुढा + आपा - बुढापा
टीका + आयन - टीकायन
मीठा + आस - मिठास
बाप + औती - बपौती
काठ + औती - बपौती
लडका + पन - लडकपन
पागल + पन - पागलपन
बच्चा + पन - बचपन
छोटा + पन - छुटपन
लाल + इमा - लालिमा
गुरू + इमा - गरिमा
गर्म + ई - गर्मी

3. सम्बन्ध वाचक

ससुर + आल - ससुराल
नानी + आल - ननिहाल
मामा + एरा - ममेरा
चाचा + एरा - चचेरा
रस + ईला - रसीला
जहर + ईला - जहरीला
पानी + ईला - पनिला - पानी जैसा रंग
कृपा + आलु - कृपालु
ईर्ष्या + आलु - ईर्ष्यालु
दया + आलु - दयालु
भाव + उक - भावुक
इच्छा + उक - इच्छुक
समाज + इक - सामाजिक
व्यवहार + इक - व्यावहारिक
चरित्र + इक - चारित्रिक

4. अपत्यवाचक (संतान वाचक)

मूलस्वर	दीर्घस्वर	गुणस्वर	वृद्धि स्वर
अ	आ	-	आ
इ	ई	ए	ऐ
उ	ऊ	ओ	औ
ऋ	ॠ	अर्	आर्

उदाहरण -

इक प्रत्यय

यदृच्छा + इक - यादृच्छिक
सर्वभूमि + इक - सार्वभौमिक
चरित्र + इक - चारित्रिक
समर + इक - सामरिक
व्यक्ति + इक - वैयक्तिक
पशु + इक - पाशविक
न्याय + इक - न्यायिक/ नैयायिक

अ प्रत्यय

मगध + अ - मागध
मनु + अ - मानव
दनु + अ - दानव
पांडु + अ - पांडव
सिंधु + अ - सैन्धव
मुनि + अ - मौन
सुष्ठ + अ - सौष्ठव

इ प्रत्यय

दशरथ + इ - दाशरथी
मरुत + इ - मारुति
सरथ + इ - सारथि
मिट्टी का ढेर वल्मीक + इ - वाल्मीकि

ई प्रत्यय

जनक + ई - जानकी
गंधार + ई - गांधारी
द्रुपद + ई - द्रौपदी
मिथिला + ई - मैथिली
भागीरथ + ई - भागीरथी

अयन प्रत्यय

राम + अयन - रामायण
नार + अयन - नारायण

आयन प्रत्यय

काव्य + आयन - कात्यायन
वात्स्य + आयन - वात्स्यायन
मौद्गल्य + आयन - मौद्गल्यायन

एय प्रत्यय

गंगा + एय - गांगेय
मृकंड + एय - मार्कंडेय
कृतिका + एय - कार्तिकेय
पथ + एय - पाथेय

य प्रत्यय

सदृश + य - सादृश्य
सहचर + य - साहचर्य
वत्सल + य - वात्सल्य
कवि + य - काव्य
महात्मा + य - माहात्म्य
मधुर + य - माधुर्य
धीर + य - धैर्य

दीन	+	य	-	दैन्य
दीति	+	य	-	दैत्य
विधवा	+	य	-	वैधव्य
ईश्वर	+	य	-	ऐश्वर्य
वृधक्	+	य	-	वार्धक्य
पृथक्	+	य	-	पार्थक्य
शूर	+	य	-	शौर्य
उचित	+	य	-	औचित्य
सुन्दर	+	य	-	सौन्दर्य
एक	+	य	-	ऐक्य
स्वस्थ	+	य	-	स्वास्थ्य

5. ऊनतावाचक / न्यूनतावाचक प्रत्यय (छोटा होना)

उदाहरण -

बाबू	+	उआ	-	बबूआ
लाठी	+	इया	-	लठिया
डिब्बा	+	इया	-	डिबिया
खाट	+	इया	-	खटिया
लोटा	+	इया	-	लुटिया
प्रस्तुति	+	करण	-	प्रस्तुतीकरण
खाट	+	ओला	-	खटोला
माँझ	+	ओला	-	मंझोला
साँप	+	ओला	-	संपोला
मंडल	+	ई	-	मंडली
टोकरा	+	ई	-	टोकरी
रस्सा	+	ई	-	रस्सी
नाला	+	ई	-	नाली

6. स्त्रीलिंग प्रत्यय

उदाहरण -

पति	+	नी	-	पत्नी
प्रिय	+	आ	-	प्रिया
छात्र	+	आ	-	छात्रा
शिष्य	+	आ	-	शिष्या
कुत्ता	+	इया	-	कुतिया
चिडा	+	इया	-	चिडिया
देव	+	ई	-	देवी
बेटा	+	ई	-	बेटी
ठाकुर	+	आइन	-	ठाकुराइन
पंडित	+	आइन	-	पंडिताइन
मुंशी	+	आइन	-	मुंशीआइन
देवर	+	आनी	-	देवरानी
इन्द्र	+	आनी	-	इन्द्राणी
सेठ	+	आनी	-	सेठानी
लेखक	+	इका	-	लेखिका
कमल	+	इनी	-	कमलिनी
यक्ष	+	इनी	-	यक्षिनी
शेर	+	नी	-	शेरनी
मोर	+	नी	-	मोरनी
नट	+	नी	-	नटनी

कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रत्यय

आ - आटा, घेरा, छापा, गुजारा
आई -गढाई, चराई, पढाई, रूलाई, लिखाई,लडाई
आन -उठान, पिसान, मिलान, लगान, मकान, खदान
आप - मिलाप, कलाप, अलाप, प्रलाप, विलाप, संथाल
आव - उतराव, घुमाव, चलाव, चुनाव, बनाव
आस - निकास, हुलास, विकास, गिलास, विलास,प्यास
इया - बढ़िया, घटिया, मइया, भुइया, गइया, भइया
ई - चढाई, लडाई, बडाई, पढाई, लिखाई, हंसी,
औनी - कमौनी, लिखौनी, उठौनी, नचौनी, गवौनी
त - खपत, बचत, लागत, जपत, बनत, बिगडत, हंसत
ती - चढ़ती, बढ़ती, घटती, रटती, पटती, श्रीमती
न्ती - चढ़न्ती, बढ़न्ती, घटन्ती, उठन्ती, गिरन्ती,
न - उद्घाटन,पुरान, देन, मारन, मोहन, लगन, लेनदेन
नी - कटनी, मरनी, भरनी, लडनी, अनी, ठनी
र - ठोकर, जोकर, मकर, बेर, केर, नीर, क्षीर
वट - तरावट, लिखावट, सजावट, बनावट, केवट
हट - आहट, चिल्लाहट, घबराहट, बुलबुलाहट
अंकू - उंकू, अडंकू, पढाकू
अक - लेखक, पाठक, वाचक, नायक, सम्प्रदायक, सार्थक, दीपक, वाचक
अक्कड - पियक्कड, बुझक्कड, भुलक्कड, कुदक्कड
आ - चढा, रखा, कटा, भूंज़ा, फोडा, चला
आक - पैराक, तैराक, तडाक, उडाक
आकू - लडाकू, उडाकू, पढाकू, कूदाकू, हलाकू
इयल - अडियल, सडियल, मरियल, बढियल, दढियल
इया - जडिया, लखिया, धुनिया, नियरिया, दुनिया
ऊ - खाऊ, रट्टू, उतारू, चालू, बिगाडू, मारू, काटू,
एरा - कमेरा, लुटेरा, झलेरा, पखेरा, हिलेरा
एया - कटैया, बचैया, परोसैया, भरैया
ऐत - लठैत, लडैत, चढैत, फिकैत
औडा - भगोडा, हँसोडा, मरोडा
वैया - खवैया, गवैया, देवैया, लेवैया
सार - मिलनसार, हिलनसार
हार - सेवनहार, खेवनहार, तारणहार, देवनहार,
हारा - सेवनहारा, खेवनहारा, तारणहारा, देवनहारा
ना - खाना, गाना, बोलना, रोना, पीना, सोना, आना, लेना, देना
नी - चटनी, सुँघनी, कहनी, छननी, ओढ़नी, घोटनी, पढ़नी, सुननी
आ - झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, घेरा
ई - रेती, फाँसी, गाँसी, चिमटी
ऊ - झाड़ू, माडू, काढ़ू, साढू
न - झाडन, बेलन, जामन
ना - बेलना, कसना, ओढना, घोटना, रेतना, दलना
आवना - सुहावना, लुभावना, डरावना, हँसावना, रूलावना, गिरावना
ना - उडना, हँसना, सुहाना, रोना, लदना
नी - कहानी, सुननी, हँसनी, ओढ़नी, पहननी, जननी
वाँ - ढलवाँ, कटवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ

क – बैठक, फाटक
ना – झिरना, रमना, पालना
आनी – कमानी, लुभानी, मिलानी
औना – खिलौना, बिछौना, उढौना
औनी – पहरौनी, ठहरौनी, मिथौनी, गवौनी, बुलौनी,
आवनी – छावनी, उठावनी, गिरावनी, बुलावनी, लुभावनी, मिलावनी, डोलवानी
इन – कमाइन, गन्धाइन, लियोइन, दियाइन
का – छिलका, किलका, चिलका
की – फिरकी, फुटकी, डुचकी, लुटकी
आ – जोडा, युवा, सर्राफा, बजाजा, बोझा
आइँद – कपडाइँद, सडाइँद, घिनोइँद, मघाइँद
आई – भलाई, बुराई, ढिठाई, चतुराई, पण्डिताई
आन – घमासान,ऊँचाई, निचान, लम्बान, चौडान, उडान,
आयत – बहुतायत, पंचायत, तिहायत, अपनायत
आवट – अमावट, महावट, गिरावट
आस – मिठास, खटास, निन्दास
आहट – कडुवाहट, चिकनाहट, गरमाहट, चिल्लाहट
औती – बपौती, बुढौती, छिनौती
त – चाहत, रंगत, मिल्लत
ती – कमती, बढती, घटती, चढती
पन – कालापन, लडकपन, बालपन, पागलपन,
पा – बुढापा, रंडापा, बहिनापा, मोटापा
स – आपस, धमस, तमस, रजस
इया – आढतिया, मखनिया, बखेडिया, मुखिया, रसोइया
एडी – भँगेडी, गँजेडी, नशेडी
एली – हथेली, भेली, तबेली
आऊ – अगाऊ, धराऊ, बटाऊ, पण्डिताऊ
ऐल – खपरैल, दुधैल, दन्तैल, तोन्दैल
ला – अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाडला
वन्त – गुणवन्त, धनवन्त, दयावन्त, शीलवन्त
हरा – सुनहरा, रूपहरा
हा – हलवाहा, पनिहा, कविराहा
आ – झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, झोरा, घेरा
इया – खटिया, फुडिया, डबिया, गठरिया, बिटिया
ई – पहाडी, घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी, रस्सी
की – कनकी, टिमकी
टा – रोगटा, कलूटा
टी – चोटी, बहूटी
डा – चमडा, बछडा, दुःखडा, सुखडा, टुकडा, लँगडा
डी – टँगडी, पलँगडी, पँखडी, लालडी
री – कोठरी, छतरी, बांसुरी, मोटरी, गठरी, कुमारी
ली – टिकली
वा – बछवा, बचवा, पुरवा
सा – लालसा, अच्छासा, उडतासा, एकासा, मरासा
आना – राजपुताना, हिन्दुआना, तेलंगाना, उडियाना
इया – मथुरिया, कलकतिया, सरवरिया, कनौजिया
डी– अगाडी, पिछाडी
आर – दुधार, गँवार
इक – कार्मिक, धार्मिक, तार्किक, कारुणिक,
ई – आरी, ऊनी, देशी
उआ – मछुआ, गरूआ, खारूआ, फगुआ, टहलुआ
ऊ – ढालू, घरू, बाजारू, फेटू, गरजू, झाँसू
आई – वाकई, खनाई, जोताई, रेताई, जिताई
आर – बिलार, छीनार, दुत्कार, सत्कार, व्यवहार
आरी – दुधारी, दुवारी, बिलारी, किनारी
इय – कमनीय, गमनीय, दमनीय
एरा – घनेरा, कमेरा, जनेरा
एल – फुलेल, नकेल, अकेल
एला – अकेला, दुकेला, बघेला, मुरेला, अधेला, पेला, ठेला, मेला, रेला
ता – पाँयता, रायता
नी – चाँदनी, पैंजनी, नथनी
वान – भाग्यवान्, मूल्यवान, गुणवान
वाला – रखवाला, बलवाला, दिलवाला, रंगवाला, घरवाला, ग्वाला, गानेवाला
ल – घायल, पायल, छागल, पागल
हट – आहट, बुलाहट, बौखलाहट

संधि

संधि का अर्थ–मिलान
संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

  प्रत्येक – प्रति + एक
  विद्यालय – विद्या + आलय
  जगदीश – जगत + ईश
  आशीर्वाद – आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–	वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
	रमा	+	ईश	=	रमेश
	आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ।
  संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–	शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
	सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
	निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

- संधि के तीन भेद होते है–
  1. स्वर संधि
  2. व्यंजन संधि
  3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि

स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

(i) दीर्घ संधि
(ii) गुण संधि
(iii) वृद्धि संधि
(iv) यण संधि
(v) अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ के बाद वे ही लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ऋ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)

1. परमार्थ – परम + अर्थ

अ + आ = आ

2. कार्य + आलय = कार्यालय

(आ + अ = आ)

3. परीक्षार्थी = परीक्षा + अर्थी

(आ + आ = आ)

4. महाशय = महा + आशय

(इ + इ = ई)

रवि + इन्द्र = रवीन्द्र

(ई + इ = ई)

शची + इन्द्र = शचीन्द्र

(इ + ई = ई)

अभि + ईप्सा = अभीप्सा

इ + ई = ई

(ई	+	ई	= ई)	(उ	+	उ	= ऊ)
नदी	+	ईश	= नदीश	भानु	+	उदय	= भानूदय
(उ	+	ऊ	= ऊ)	(ऊ	+	उ	= ऊ)
लघु	+	ऊर्मि	= लघूर्मि	वधू	+	उल्लास	= वधूल्लास
(ऊ	+	ऊ	= ऊ)	ऋ	+	ऋ	= ॠ
वधू	+	ऊर्मि	= वधूर्मि	पितृ	+	ऋण	= पितॄण

दीर्घ संधि के उदाहरण

1. अन्नाभाव – अन्न + अभाव
2. भोजनालय – भोजन + आलय
3. विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
4. महात्मा – महा + आत्मा
5. गिरीन्द्र – गिरि + इन्द्र
6. महीन्द्र – मही + इन्द्र
7. गिरीश – गिरि + ईश

Toppersnotes Unleash the topper in you

8. रजनीश	–	रजनी + ईश
9. भानूदय	–	भानु + उदय
10. वधूत्सव	–	वधू + उत्सव
11. रामावतार	–	राम + अवतार
12. सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी
13. रामायण	–	राम + अयन
14. धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म
15. पराधीन	–	पर + अधीन
16. पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष
17. दैत्यारि	–	दैत्य + अरि
18. शताब्दी	–	शत + अब्दी
19. धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ
20. मुरारि	–	मुर + अरि
21. नीलाम्बर	–	नील + अम्बर
22. परमार्थ	–	परम + अर्थ
23. रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष
24. स्वाधीन	–	स्व + अधीन
25. गीताजंली	–	गीत + अंजली
26. दीपावली	–	दीप + अवली
27. प्रार्थी	–	प्र + अर्थी
28. छिद्रन्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी
29. मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन
30. अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी
31. सापेक्ष	–	स + अपेक्ष
32. अभयारण्य	–	अभय + अरण्य
33. सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी
34. नारायण	–	नार + अयन
35. परमात्मा	–	परम + आत्मा
36. पदावलि	–	पद + अवलि
37. रत्नाकर	–	रत्न + आकर
38. निगमागमन	–	निगम + आगमन
39. पद्माकर	–	पद्म + आकर
40. शरणागत	–	शरण + आगत
41. सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह
42. विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन
43. परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी
44. रेखांकित	–	रेखा + अंकित
45. मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली
46. दावानल	–	दावा + अनल
47. तथापि	–	तथा + अपि
48. महाशय	–	महा + आशय
49. द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव
50. विद्यालय	–	विद्या + आलय
51. महात्मा	–	महा + आत्मा
52. प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद
53. कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र

54. अतिव – अति + इव
55. अभीष्ट – अभि + इष्ट
56. अतीत – अति + इत
57. महीन्द्र – मही + इन्द्र
58. महतीच्छा – महती + इच्छा
59. कपीश – कपि + ईश
60. प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा
61. अधीक्षण – अधि + इक्षण
62. अभीप्सा – अभि + इप्सा
63. नारीश्वर – नारी + ईश्वर
64. सतीश – सती + ईश
65. लघूत्तम – लघु + उत्तम
66. सूक्ति – सु + उक्ति
67. अनूदित – अनु + उदित
68. गुरूपदेश – गुरु + उपदेश
69. भानूदय – भानु + उदय
70. सिंधूर्मि – सिंधु + ऊर्मि
71. भानूर्जा – भानु + ऊर्जा
72. वधूत्सव – वधू + उत्सव
73. चमूत्तम – चमू + उत्तम
74. मातृण – मातृ + ऋण
75. होतृकार – होतृ + ऋकार

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि

उदाहरण

1. गणेश – गण + ईश
2. यथेष्ट – यथा + इष्ट
3. रमेश – रमा + ईश
4. जलोर्मि – जल + ऊर्मि
5. गंगोर्मी – गंगा + ऊर्मि
6. कष्वर्षि – कष्व + ऋषि
7. शुभेच्छा – शुभ + इच्छा
8. नरेश – नर + ईश
9. जलोष्मा – जल + ऊष्मा
10. सप्तर्षि – सप्त + ऋषि
11. नरेन्द्र – नर + इन्द्र
12. भारतेन्दु – भारत + इन्दु
13. मृगेन्द्र – मृग + इन्द्र
14. स्वेच्छा – स्व + इच्छा

15. देवेन्द्र	–	देव + इन्द्र
16. प्रेषिती	–	प्र + ईषिती
17. इतरेतर	–	इतर + इतर
18. अंत्येष्टि	–	अन्त्य + इष्टि
19. नृपेन्द्र	–	नृप + इन्द्र
20. महेन्द्र	–	महा + इन्द्र
21. अपेक्षा	–	अप + ईक्षा
22. प्रेक्षक	–	प्र + ईक्षक
23. राकेश	–	राका + ईश
24. गुड़ाकेश	–	गुड़ाका + ईश
25. सूर्योदय	–	सूर्य + उदय
26. सोदाहरण	–	स + उदाहरण
27. आद्योपान्त	–	आद्य + उपान्त
28. प्राप्तोदक	–	प्राप्त + उदक
29. जन्मोत्सव	–	जन्म + उत्सव
30. अन्योक्ति	–	अन्य + उक्ति
31. नीलोत्पल	–	नील + उत्पल
32. परोपकार	–	पर + उपकार
33. सर्वोदय	–	सर्व + उदय
34. अन्त्योदय	–	अन्त्य + उदय
35. महोदय	–	महा + उदय
36. महोत्सव	–	महा + उत्सव
37. जलोर्मि	–	जल + ऊर्मि
38. जलोष्मा	–	जल + ऊष्मा
39. देवर्षि	–	देव + ऋषि
40. हेमन्तर्तु	–	हेमन्त + ऋतु
41. शीतर्तु	–	शीत + ऋतु
42. शिशिरर्तु	–	शिशिर + ऋतु
43. उत्तमर्ण	–	उत्तम + ऋण
44. अधमर्ण	–	अधम + ऋण
45. राजर्षि	–	राज + ऋषि
46. महर्ण	–	महा + ऋण
47. महर्तु	–	महा + ऋतु
48. तवल्कार	–	तल + लृकार

नोट

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ़
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि

उदाहरण

1. परमैश्वर्य – परम + ऐश्वर्य
2. सदैव – सदा + एव
3. महैश्वर्य – महा + ऐश्वर्य
4. परमौज – परम + ओज
5. महौजस्वी – महा + ओजस्वी
6. वनौषध – वन + औषध
7. महौषध – महा + औषध
8. लोकैषणा – लोक + एषणा
9. हितैषी – हित + एषी
10. तथैव – तथा + एव
11. वसुधैव – वसुधा + एव
12. सदैव – सदा + एव
13. मतैक्य – मत + ऐक्य
14. विचारैक्य – विचार + ऐक्य
15. गंगौक – गंगा + ओक
16. महौज – महा + ओज
17. जलौषधि – जल + औषधि
18. परमौत्सुक्य – परम + औत्सुक्य
19. देवौदार्य – देव + औदार्य
20. विश्वैक्य – विश्व + ऐक्य
21. स्वैच्छिक – स्व + ऐच्छिक

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो–
इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

उदाहरण

1. अत्यधिक – अति + अधिक
2. इत्यादि – इति + आदि
3. नद्यागम – नदी + आगम
4. अत्युत्तम – अति + उत्तम
5. अत्यूष्म – अति + उष्म
6. प्रत्येक – प्रति + एक
7. स्वच्छ – सु + अच्छ
8. स्वागत – सु + आगत
9. अन्वेषण – अनु + एषण
10. अन्विति – अनु + इति
11. पित्राज्ञा – पितृ + आज्ञा
12. अत्यल्प – अति + अल्प
13. व्यसन – वि + असन
14. अध्यक्ष – अधि + अक्ष
15. पर्यंक – परि + अंक
16. अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
17. अभ्यंतर – अभि + अंतर
18. व्यय – वि + अय
19. पर्यवेक्षक – परि + अवेक्षक
20. व्यर्थ – वि + अर्थ
21. अत्यन्त – अति + अन्त

22. प्रत्यक्ष – प्रति + अक्ष
23. रीव्यनुसार – रीति + अनुसार
24. व्यवहार – वि + अवहार
25. न्यसत – नि + अस्त
26. अध्ययन – अधि + अयन
27. प्रत्यय – प्रति + अय
28. गत्यवरोध – गति + अवरोध
29. गत्यनुसार – गति + अनुसार
30. व्यष्टि – वि + अष्टि
31. प्रर्त्यपण – प्रति + अर्पण
32. अभ्यागत – अभि + आगत
33. प्रत्याशा – प्रति + आशा
34. अत्याचार – अति + आचार
35. व्याकुल – वि + आकुल
36. अभ्यास – अभि + आस
37. अत्यावश्यक – अति + आवश्यक
38. व्यापक – वि + आपक
39. पर्याप्त – परि + आप्त
40. पर्यावरण – परि + आवरण
41. अध्यादेश – अधि + आदेश
42. व्यास – वि + आस
43. व्याप्त – वि + आप्त
44. न्याय – नि + आय
45. व्याकरण – वि + आकरण
46. व्यायाम – वि + आयाम
47. व्याधि – वि + आधि
48. प्रत्यारोपण – प्रति + आरोपण
49. अभ्युदय – अभि + उदय
50. प्रत्युत्तर – प्रति + उत्तर
51. उपर्युक्त – उपरि + उक्त
52. प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
53. न्यून – नि + ऊन
54. अत्यैश्वर्य – अति + ऐश्वर्य
55. देव्यपर्ण – देवी + अर्पण
56. नद्यपर्ण – नदी + अर्पण
57. देव्यागमन – देवी + आगमन
58. नार्युचित – नारी + उचित
59. स्त्र्युचित – स्त्री + उचित
60. स्त्र्युपयोगी – स्त्री + उपयोगी
61. नद्युर्मि – नदी + ऊर्मि
62. अत्यौचित्य – अति + औचित्य
63. स्वल्प – सु + अल्प
64. मन्वन्तर – मनु + अन्तर
65. स्वच्छ – सु + अच्छ
66. मध्वरि – मधु + अरि
67. तन्वंगी – तनु + अंगि
68. स्वस्ति – सु + अस्ति
69. गुर्वादेश – गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा – गुरु + आज्ञा

समास

- समास शब्द का अर्थ – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	**पूर्वपद**	**उत्तरपद**	**समास विग्रह**
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	**समास या समस्त पद**	**समास विग्रह**
1.	यथा समय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।

उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।

1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है–

1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभावी समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

कर्मधारय समास   द्विगु समास

नोट –

कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।
अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।

3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

1. **अव्ययीभाव समास** – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या अव्यय शब्द होता है व इस समास में एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

समस्त पद	**विग्रह**
1. बेखबर	बिना खबर के
2. प्रतिदिन	हर दिन
3. भरपेट	पेट भरकर
4. आजन्म	जन्म से लेकर
5. आमरण	मरणतक
6. यथासमय	समय के अनुसार
7. प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8. प्रतिक्षण	हर क्षण
9. बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में

Unleash the topper in you

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ/यावत, यथा, प्रति, बा/स, बे/ला/निस्/निर्/नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे – बेशर्म – शर्म से रहित

अकारण	बिना कारण के
अनजाने	बिना जानकर
यथास्थिति	जैसी स्थिति है
यथामति	जैसी मति है
यथा विधि	जैसी विधि निर्धारित है
नगण्य	न गण्य

2. **तत्पुरुष समास –** इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है।
   इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्म को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
धुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता
छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास
सभाभवन	सभा के लिए भवन
रोकड़बही	रोकड़ के लिए बही
हवन कुण्ड	हवन के लिए कुण्ड
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
विद्युत्गृह	विद्युत् के लिए गृह
समाचार पत्र	समाचार के लिए पत्र

(iv) अपादान तत्पुरुष समास – इस समास में 'से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

अवसरवंचित	अवसर से वंचित
देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुराने वाला
कर्त्तव्य विमुख	कर्त्तव्य से विमुख
जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणातीत	गुणों से अतीत
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
आशातीत	आशा से अतीत
गुणरहित	गुण से रहित
गर्वशून्य	गर्व से शून्य
जन्मरोगी	जन्म से रोगी
जातबाहर	जाति से बाहर
जलरिक्त	जल से रिक्त

(v) संबंध तत्पुरुष समास – यह समास का, के, की लोप से बनने वाला समास है।

जैसे –

गंगाजल	गंगा का जल
नगरसेठ	नगर का सेठ
आत्महत्या	आत्म की हत्या
कार्यकर्ता	कार्य कर कर्ता
गोमुख	गो का मुख
मतदाता	मत का दाता
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा

पथपरिवहन	पथ का परिवहन
भूकंप	भू का कंप
मंत्रिपरिषद्	मंत्रियों की परिषद्
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
रक्तदान	रक्त का दान
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी
शांतिदूत	शांति का दूत

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास – इस समास में 'में' 'पर' चिह्नों का लोप होता है।

जैसे –

जलमग्न	जल में मग्न
कर्मनिष्ठ	कर्म में निष्ठ
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
सिरदर्द	सिर में दर्द
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवासी	ग्राम मे वास करने वाला
जलयान	जल पर चलने वाला यान
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत
गंगास्नान	गंगा में स्नान
कार्य कुशल	कार्य में कुशल
कलानिपुण	कला में निपुण
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
ईश्वराधीन	ईश्वर पर अधीन
अश्वारूढ	अश्व पर आरूढ

नञ् तत्पुरूष समास – यदि किसी सामासिक पद में प्रथम पद के रूप में अ/अन/अन् /न/ना उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तथा यह उपसर्ग मूल शब्द को विलोम शब्द के रूप में परिवर्तित कर रहे हो तो वहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।
इस समाज का विग्रह करते समय उपसर्ग को हटाकर 'न' शब्द जोड़ दिया जाता है।

जैसे –

अज्ञान	न ज्ञान
अनन्त	न अन्त
नालायक	न लायक
अनमोल	न मोल

3. द्विगु समास – इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थाव् गणना बोधक होता है व दूसरा पद प्रधान होता है, क्योंकि इसमें बहुदा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है।

इस समास के पदों का विग्रह करते समय दोनो पदों को लिखकर अन्त में का समूह/समाहार पद जोड़ दिया जाता हैं।

समस्त पद	विग्रह
1. नवरत्न	नौ रत्नो का समूह
2. अठवाड़ा	आठ दिनों का समूह
3. द्विगु	दो गौओ का समूह
4. शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षो) का समूह
5. त्रिभुज	तीन भुजाओ का समूह
6. चौराहा	चार राहों का संगम
7. पंचरात्र	पंच रात्रियों का समूह
8. त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
9. तिकोना	तीन कोनों का समूह
10. सिपाही	सि (तीन) पैरों का समूह
11. एकतरफ	एक ही तरफ है जो
12. अष्टधातु	आठ धातुओं का समूह
13. त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
14. शतक	सौ का समूह
15. चौबारा	चार द्वार वाला भवन

अपवाद –

पक्षद्वय	दो पक्षो का समूह
लेखकद्वय	दो लेखकों का समूह
संकलनत्रय	तीन संकलनो का समूह

4. **कर्मधारय समास –** इस समास के पहले व दूसरे पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध होता है।
इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है।
इस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहते है।

समस्त पद **विग्रह**

(i) विशेषण विशेष्य

महापुरुष	महान् है जो पुरुष
पीतांबर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)

(ii) उपमान– उपमेय युक्त पद	विग्रह
चंद्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
भवसागर	भवरूपी सागर
विद्याधन	विद्यारूपी धन
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र वाली
पादार विन्द	अरविन्द के समान हैं जो पाद
चंद्रमुख	चंद्र के समान है जो मुख